ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II):248-252

स्वामी विवेकानंद के दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन

संदीप कुमार तिवारी एवं साधना त्रिपाठी

शिक्षक शिक्षा विभाग
नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज

Received: 19.08.2025 *Revised: 19.08.2025* *Accepted: 11.09.2025*

सारांश

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय समाज में आध्यात्मिक नवजागरण, वेदांत दर्शन, मानवतावाद और राष्ट्रवाद के विचार को लोकप्रिय बनाया। उनके दर्शन में अद्वैत वेदांत, व्यावहारिक आध्यात्म, सामाजिक समानता व सेवा भावना का समावेश था। उन्होंने धर्म की व्याख्या वैज्ञानिक और सार्वभौमिक सिद्धांतों के आधार पर की। उनके विचार आज भी सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक उन्नयन के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस शोधपत्र में उनके दर्शन की समीक्षात्मक विवेचना की गई है।

मुख्य शब्द; *भारतीय समाज, नवजागरण, वेदांत दर्शन, अद्वैत वेदांत I*

प्रस्तावना:

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत समय के कई संकटों से गुजर रहा था—राजनैतिक पराधीनता, सामाजिक रूढ़ियाँ, धार्मिक कट्टरता, शिक्षा का अभाव और सांस्कृतिक हीनता-भावना। ऐसे समय में स्वामी विवेकानंद एक प्रकाश-पुंज की भाँति भारतीय मानस के पुनर्निर्माण हेतु अवतरित हुए। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता के एक सभ्य, शिक्षित परिवार में हुआ। बचपन से ही उनमें गहन जिज्ञासा, विवेकशीलता, तर्कप्रियता और सामाजिक असमानता के प्रति विद्रोह देखा गया। उनके आध्यात्मिक जीवन की दिशा महान संत रामकृष्ण परमहंस के सान्निध्य में बदली, जहाँ से उन्होंने वेदांत, अद्वैत, मानवतावाद और सेवा के तत्व आत्मसात किए।

स्वामी विवेकानंद ने अपने विचारों और कार्यों से न केवल भारतीय समाज में नैतिक ऊर्जा और सांस्कृतिक गर्व का संचार किया, बल्कि पश्चिम में भी सनातन धर्म, योग एवं भारतीय चिंतन की एक नई पहचान स्थापित की। उन्होंने 1893 के शिकागो विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से प्रतिनिधित्व करते हुए "सर्वधर्म समभाव" की उद्घोषणा दी। उनके विचारों में शिक्षा, धर्म,

मानवता, राष्ट्रप्रेम, आत्मबल और कर्मयोग का समन्वय मिलता है। वे मानते थे कि धर्म जीवन का साधन है, न कि केवल पूजा-पद्धति या कर्मकांड। उनके अनुसार, "जितना बड़ा संघर्ष, उतनी बड़ी सफलता"—यह विचार बल देता है कि विपरीत परिस्थितियाँ भी महान व्यक्तित्वों को जन्म देती हैं।

स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना कर सेवा, शिक्षा और जनकल्याण को सशक्त आधार दिया। उन्होंने परंपरा-पोषित भेदभावों, छुआछूत, जातिवाद और धार्मिक आडंबरों का प्रबल विरोध किया, साथ ही भारतीय युवाओं में अबाध आत्मविश्वास, सामाजिक जिम्मेदारी और देशभक्ति रोपित की। वे समग्र मानवता की भलाई के लिए धर्म की दृष्टि को सामाजिक सरोकारों से जोड़ते हैं। विवेकानंद के दर्शन का गहन अध्ययन आज भी प्रेरणा-स्रोत है। उनके विचार, आज के समय में बिल्कुल भी अप्रासंगिक नहीं हुए हैं, बल्कि समाज-सुधार, चरित्र-निर्माण और वैश्विक नैतिकता के क्षेत्र में और भी आवश्यक हो चुके हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में स्वामी विवेकानंद के दर्शन की मूल अवधारणाओं और उनकी आलोचनात्मक विवेचना का प्रयास किया गया है।

स्वामी विवेकानंद का दर्शन:

स्वामी विवेकानंद का दर्शन वेदांत (विशेषकर अद्वैत वेदांत), योग, मानवतावाद और राष्ट्रवाद के समन्वय से निर्मित है। उनके विचारों में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश तो है, परंतु वे समयानुकूल नवीनीकरण और जागरूकता की भी वकालत करते हैं।

- **वेदांत और अद्वैत:**

स्वामी जी अद्वैत वेदांत के समर्थक थे, जिसके अनुसार सम्पूर्ण विश्व और उसकी विविधता के मूल में एक ही 'ब्रह्म' विद्यमान है। वेदांत के अनुसार प्रत्येक आत्मा दिव्य है और आत्मा-परमात्मा अभिन्न है। विवेकानंद ने कहा: "हर व्यक्ति में भगवान का अंश है; हमें दूसरों की सेवा उसी भावना से करनी चाहिए जैसे भगवान की सेवा करते हैं।" वे मानते थे कि धर्म का सार आत्मा की शुद्धता, सत्य, ब्रह्म की प्राप्ति तथा सभी में उसी परम तत्व की प्रतिष्ठा स्वीकारना है।

- **व्यावहारिक वेदांत/आध्यात्म:**

विवेकानंद का दर्शन केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक भी था। उनका 'व्यावहारिक वेदांत' इस बात पर बल देता है कि ईश्वर की पूजा सेवा के रूप में की जानी चाहिए; 'दरिद्र नारायण' अर्थात् ग़रीब एवं दबे-कुचले लोगों में ईश्वर का अनुभव हो सकता है। उन्होंने धार्मिकता को स्वर्णिम आदर्श बनाने के बदले व्यावहारिक समाज-सुधार हेतु धर्म का अनुप्रयोग किया।

- **शिक्षा-दर्शन**

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माण,

आत्मबल, नैतिकता तथा स्वावलंबन है। उन्होंने शिक्षा की पुनर्रचना की बात की और बालकों में छिपी पूर्णता को अभिव्यक्ति देने पर बल दिया। उनका प्रसिद्ध कथन है, "शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

- **धार्मिक समन्वय व सार्वभौमिकता:**

विवेकानंद ने सभी धर्मों की एकता का समर्थन किया। वे मानते थे कि "सभी धर्म सत्य तक पहुँचने के साधन हैं" । उन्होंने हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम, आदि में निहित सार्वभौमिक मूल्यों को रेखांकित किया, जिससे धर्मनिरपेक्षता को मजबूती मिली।

- **कर्म और मानवतावाद:**

विवेकानंद कर्मयोग की महत्ता को सर्वोपरि मानते थे; 'सेवा धर्म' को ईश्वर भक्ति के समकक्ष रखा। उन्होंने अत्यल्प साधनों के बीच भी देशहित, समाजोत्थान और लोकसेवा के लिए कर्मरत रहने की प्रेरणा दी। उनके अनुसार, "सेवा ही सच्चा धर्म है।"

- **राष्ट्रवाद:**

राष्ट्रीय जागरण में विवेकानंद का योगदान अमूल्य है। उन्होंने भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान को अपने विचारों से दिशा दी। विवेकानंद ने बार-बार कहा, "मनुष्य बनो!"—इसका तात्पर्य था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर छिपी शक्ति और योग्यता को पहचानना चाहिए।

- **नैतिकता और चरित्र निर्माण:**

उनका मानना था कि नैतिकता मानव-स्वभाव की अंतःस्फूर्ति है और वास्तविक शिक्षा वही है, जो चरित्र निर्माण में सहायक हो। उन्होंने "उठो, जागो और लक्ष्य तक पहुँचे बिना मत रुको" जैसे प्रेरक वचनों से समाज में नवचेतना जगाई।

स्वामी विवेकानंद दर्शन की समीक्षा:

स्वामी विवेकानंद का दर्शन समकालीन संदर्भों में न केवल प्रासंगिक है, बल्कि उसकी अत्यधिक आवश्यकता भी महसूस की जा रही है। उनके अद्वैत वेदांत ने आत्मा और परमात्मा की एकता एवं ब्रह्म में समावेश की धारणा को लोकप्रिय बनाया। यह विचार सामाजिक भेदभाव और संकीर्णताओं को तोड़ने तथा समरसता और मानवमात्र की एकता को स्थापित करने में समर्थ है।

1. सामाजिक पुनरुत्थान में योगदान

स्वामी जी के 'दरिद्र नारायण' और 'सेवा परम धर्म' जैसे सिद्धांतों ने निचले वर्ग के लोगों के प्रति समाज की सोच को बदला। उन्होंने नारी-शिक्षा, दलित-सशक्तिकरण और सामाजिक असमानताओं के उन्मूलन को अपने जीवन का उद्देश्य बनाया। सिद्धान्त रूप में यह अवश्य

सराहनीय है, किंतु व्यावहारिक स्तर पर जातिवादी व्यवस्था को पूरी तरह तोड़ने में तत्कालीन समाज पर्याप्त सक्रिय नहीं हो सका, क्योंकि कई क्षेत्रों में वर्ण और जाति-प्रथा की जड़ें गहरी थीं।

2. शिक्षा-दर्शन की व्यावहारिकता:

स्वामी विवेकानंद ने व्यावहारिक शिक्षा एवं चरित्र-निर्माण आधारित शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया, परंतु उपनिवेशकालीन शिक्षा पद्धति में इस दर्शन की उपेक्षा हुई। आज भी शिक्षा प्रणाली में केवल सैद्धांतिक ज्ञान और परीक्षा-केन्द्रितता पर जो जोर है, वह विवेकानंद के शिक्षादर्शन से भिन्न है। यदि उनके द्वारा प्रोत्साहित 'चरित्र निर्माण,' 'स्वावलंबन' अथवा 'व्यावहारिकता' को शिक्षा का आधार बनाया जाता, तो भारतीय युवा और ज्यादा सशक्त व आत्मनिर्भर होते।

3. धर्म की आलोचनात्मक पुनर्व्याख्या:

विवेकानंद ने धर्म को जीवन-संघर्ष, सामाजिक उन्नति तथा विश्वशांति में सहायक सिद्ध किया। वे धार्मिक कट्टरता, आडंबर और रूढ़िवादता के प्रबल विरोधी थे। हालांकि, वर्तमान समय में भी धर्म को लेकर कई गैर-वैज्ञानिक व्यवहार प्रचलन में हैं, जिनका समाधान विवेकानंद के समन्वयवादी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हो सकता है।

4. आधुनिक संदर्भ में वैश्विकता और मानवतावाद:

स्वामी जी का मानवतावाद सीमाओं से परे है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना और सभी धर्मों, जातियों, वर्गों की एकता—आज के सांप्रदायिक तनाव, सामाजिक असमानता, नस्लवाद एवं धार्मिक द्वेष जैसी वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में और अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

5. आलोचना एवं सीमाएँ:

कई समकालीन चिंतक विवेकानंद के धर्म, राष्ट्रवाद और सेवा-सिद्धांत की सराहना करते हैं, किंतु कुछ आलोचक उनकी विचारधारा में अंतर्निहित संरचनात्मक विरोधाभास भी इंगित करते हैं—जैसे कि वे वर्ण-व्यवस्था या वेद-विश्वास को अंतिम मानते हुए सामाजिक समानता के लक्ष्य में पूर्ण उदारता नहीं अपनाते1। इसके अलावा, उनका अत्यधिक आदर्शवाद और भारतीयता पर बल कहीं–कहीं आधुनिक वैज्ञानिक सोच से टकराता भी है।

फिर भी, उनकी शिक्षाएँ एवं दर्शन भारतीय समाज, विशेषकर युवाओं के लिए मार्गदर्शक स्तंभ का कार्य करते हैं। नेता, शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता या साधारण भारतीय—सभी उनके विचारों में आज भी प्रेरणा पाते हैं।

निष्कर्ष:

स्वामी विवेकानंद का दर्शन एक समन्वित, व्यावहारिक, आध्यात्मिक व राष्ट्रवादी दृष्टिकोण का रूप है, जो आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। उनका जीवन-संदेश मानव की आंतरिक शक्ति, सामाजिक समरसता, व्यावहारिक धर्म, शिक्षा और सेवा के महत्व पर आधारित है। सामाजिक-

सांस्कृतिक सुधार, धार्मिक समन्वय और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की दृष्टि से उनका दर्शन अनुकरणीय, प्रेरणादायी और युगानुकूल है। वर्तमान समय में विवेकानंद के विचारों का अनुकरण समाज को एक नई दिशा देने में सक्षम है।

संदर्भ:

1. अद्वैत आश्रम। (2025)। स्वामी विवेकानंद के पत्रों का संशोधित संस्करण। रामकृष्ण मठ, बेलूर मठ।
2. चट्टोपाध्याय, एन. (1984)। भारत में स्वामी विवेकानंद: एक सुधारात्मक जीवनी। मोतीलाल बनारसीदास।
3. दृष्टि आई.ए.एस. (2019)। विवेकानंद: जीवन दर्शन। दृष्टि प्रकाशन।
4. गोखले, बी. जी. (1966)। स्वामी विवेकानंद: एक जीवनी। जयको पब्लिशिंग हाउस।
5. गोविंद कृष्णन, वी. (2023)। विवेकानंद: स्वतंत्रता के दार्शनिक। एलेफ बुक कंपनी।
6. कौशिक। (2023)। स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार और उनकी भविष्योन्मुखी प्रासंगिकता। एसएसआरएन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल।
7. निखिलानंद, एस. (1953)। विवेकानंद: एक जीवनी। रामकृष्ण-विवेकानंद केंद्र।
8. बर्क, एम. एल. (2025)। पश्चिम में स्वामी विवेकानंद: नई खोजें (6 खंड)। अद्वैत आश्रम।
9. विवेकानंद, एस. (2009)। स्वामी विवेकानंद की पूर्ण कृतियाँ (खंड 1–9)। अद्वैत आश्रम।
10. शर्मा, ए. (2013)। धर्म दर्शन और अद्वैत वेदांत: धर्म और तर्क में तुलनात्मक अध्ययन। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. सोय, आर. (2023)। स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन के प्रकाश में एनईपी 2020। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक डेवलपमेंट एंड रिसर्च।
12. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/the-monk-who-shaped-india-s-secularism
13. https://www.cheggindia.com/hi/swami-vivekanand-ka-jeevan-parichay/
14. https://www.jetir.org/papers/JETIR2203178.pdf
15. https://dspmuranchi.ac.in/pdf/Blog/doc%202.pdf
16. https://hindi.webdunia.com/swami-vivekananda-special/swami-vivekananda-jayanti-2023-123011100041_1.html
17. https://www.csirs.org.in/uploads/paper_pdf/swami-vivekanand-ki-darshnik-evm-shaikshik-vichaardhara.pdf

Disclaimer/Publisher’s Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.